प्राक् -कथन

संगीत कला युग युगान्तर से मानव जीवन की अभिन्न सहचरी रही है। भारत के संदर्भ में यह कला काल विशेष के शास्त्रकारों की कल्पना से उद्भूत शास्त्र नियमावलियों में बंधकर शास्त्रीय संगीत के रुप में पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तानान्तरित होती आई है। कभी समय व पाठ्यक्रम के अनुबंधन से मुक्त गुरु शिष्य परम्परा के रुप में तो कभी परिवर्तन के विविध चरणों को पार करती हुई संस्थागत शिक्षण के रुप में। अस्तु परिवर्तन शाश्वत् नियम है, जिसका प्रभाव हमारे सामाजिक, राजनैतिक धार्मिक तथा सांस्कृतिक क्षेत्र के समस्त पहलुओं पर पड़ता है। इस प्रकार एक सार्वभौमिक प्रक्रिया के रुप में परिवर्तन की शाश्वतता ने भारतीय शा. संगीत के पृष्ठों पर भी अपना हस्ताक्षर किया है। यदि हम प्राचीन काल से वर्तमान समय तक शा. सं. के विकास एवं परिवर्तन पर विचार करे तो ज्ञात होता है कि समय के साथ-2 शास्त्रीय संगीत शिक्षा के अर्वाचीन रुप में प्रचुर परिवर्तन हुआ है। वैदिक युग से भारत में संगीत शिक्षण की आदर्श परम्परा रुप गुरु शिष्य परम्परा रही है। यही परम्परा मध्यकालीन घराना परम्परा में भी पल्लिवित पुष्पित होती रही है। कतिपय संकुचित विचारधारा की पराकाष्ठा के प्रतिवाद स्वरुप संगीत को 19वीं सदी के उत्तरार्द्ध में विष्णुद्धय ने जन सामान्य सुलभ संस्थागत शिक्षण प्रणाली में परिणित कर संगीतोद्धार हेतु प्रयत्न किये साथ ही वैज्ञानिक उत्कर्ष से प्रभावित संगीत की शिक्षण पद्धति व प्रचार-प्रसार की परिवर्तित प्रक्रिया ने संगीत के विकास के विविध चरणों को अति कौतुहल का विषय बना दिया है।

शोधकर्त्री ने इसी कौतुहल से प्रभावित होकर संगीत गायन क्षेत्र के अन्तर्गत आये परिवर्तन, संगीत शास्त्र की दृष्टि से लिखित महत्व पूर्ण पुस्तकों का सम्पादन, प्रकाशन अनुवादन, गायन क्षेत्र के 20वीं शताब्दी में शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में कलाकारों के योगदान, विदेशों में शास्त्रीय संगीत का प्रचार आदि से संबंधित जानकारी प्राप्त कर 1901 से वर्तमान समय तक उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत (विशेषकर गायन के संदर्भ में) हुये विकास एवं परिवर्तनों को विश्लेषित करने हेतु शोधकर्त्री ने प्रस्तुत विषय को शोधकार्य हेतु चयनित किया।